Roll No. .....

D–3135

B. A. (Part I) EXAMINATION, 2020

(Old Course)

HINDI LITERATURE

Paper First

(प्राचीन हिन्दी काव्य)

Time : Three Hours] [*Maximum Marks : 75*

सूचना : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 24

(क) राम रसाइन प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।
कबीर पीवण दुलभ है, माँगै सीस कलाल॥
सबै रसांइण मैं किया, हरि सा और न कोइ।
तिल इक घट में संचरै, तौ सब तन कंचन होइ॥

अथवा

रोइ गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुःख एक एक साँसा॥
तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई॥
सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासौं पाव सोहाग सुनारी॥
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कौनि सो घरी करै पिउ फेरा॥

(ख) हरि गोकुल की प्रीति चलाई।
सुनहु उपँगसुत मोहिं न बिसरत ब्रजवासी सुखदाई॥
यह चित होत जाउँ मैं अबहीं, यहाँ नहीं मन लागत।
गोप सुग्वाल गाय बन चारत अति दुःख पायो त्यागत॥
कहँ माखन-चोरी ? कह जसुमति 'पूत जेब' करि प्रेम।
सूर स्याम के बचन सहित सुनि व्यापत अपन नेम॥

अथवा

जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी॥
रिधि सिधि सम्पति नदीं सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती॥
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती। जनु एतनिअ बिरंचि करतूती॥
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी॥

(ग) पहले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिर नेह के तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार मँझार दई! गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातक को गुन बांधि लै मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै जाय बढ़ाय कै आस बिसाय मैं यौं बिस घोरियै जू॥

अथवा

घनआनंद जीवन मूल सुजान की कौंधन हूँ न कहूँ दरसैं।
सुन जानियै धौं कित छाय रहे दृग-चातिक प्रान तपे तरसैं।
बिन पावस तौं इन ध्यावस हो न, सु क्यों कर यौं अब सों परसैं।
बदरा बरसैं रितु मैं घिरिकै नित ही अँखियाँ उघरी बरसैं॥

2. "कबरी ने राम-रहीम की एकता समझाकर हृदय को शुद्ध और प्रेममय करने का उपदेश दिया।" इस कथन की उदाहरण सहित पुष्टि कीजिए। 8

अथवा

नागमती वियोग खण्ड के सन्दर्भ में जायसी के वियोग वर्णन का वैशिष्ट्य निरूपित कीजिए।

3. "प्रेम नाम की मनोवृत्ति का जैसा विस्तृत और पूर्ण परिज्ञान सूर को था वैसा और किसी को नहीं।" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में सूर के शृंगार वर्णन की समीक्षा कीजिए। 8

अथवा

"तुलसी का साहित्य समन्वय का साहित्य है।" इस कथन की पुष्टि में तर्क दीजिए।

4. घनानंद की प्रेमानुभूति पर विचार करते हुए सिद्ध कीजिए कि 'घनानंद प्रेम की पीर के कवि हैं'। 8

अथवा

"भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है।" इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 15

(i) रहीम के नीतिपरक दोहे।

(ii) रसखान की कृष्ण भक्ति।

(iii) रीतिमुक्त धारा।

(iv) निर्गुण काव्य परम्परा विशेषताएँ।

(v) सूफी काव्य परम्परा और जायसी।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **बारह** वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक 1

(i) जायसी ने पद्मावत में किस भाषा का प्रयोग किया ?

(ii) बिहारी रीतिकाल की किस धारा के कवि हैं ?

(iii) कबीर के गुरु का नाम क्या था ?

(iv) निर्गुण काव्य की कितनी शाखाएँ हैं ? नाम लिखिए।

(v) कबीर किस काल के कवि हैं ?

(vi) पुष्टिमार्ग का जहाज किसे कहा जाता है ?

(vii) 'रामचरितमानस' में कितने खण्ड हैं ?

(viii) 'सुजानशतक' के रचनाकार का नाम क्या है ?

(ix) 'प्रेमवाटिका' के लेखक का नाम बताइए।

(x) आपके पाठ्यक्रम में शामिल किस कवि को अकबर ने अपने नवरत्नों में स्थान दिया ?

(xi) तुलसीदास को सर्वप्रथम किस विद्वान ने लोकनायक कहा ?

(xii) 'तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' किस कवि की पंक्ति है ?

(xiii) कवि रहीम का पूरा नाम बताइए।

(xiv) रीतिकाल की **तीन** काव्यधाराओं के नाम लिखिए।

(xv) रसखान किसके भक्त थे ?